जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

13 सितम्बर 2023

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में वेबिनार का आयोजन

जामिया में हिंदी दिवस सप्ताह समारोह के क्रम में, 12 सितंबर, 2023 को राजनीति विज्ञान विभाग और सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र (एसएनसीडब्ल्यूएस), जामिया मिलिया इस्लामिया (जेएमआई) ने संयुक्त रूप से एक वेबिनार का आयोजन किया, जिसका शीर्षक था "प्रवासी भारतीयों की अखिल भारतीय पहचान बनाने में हिंदी की समकालीन प्रासंगिकता"|

जामिया की कुलपति प्रो. नजमा अख्तर (पद्मश्री) संरक्षक थीं, और विश्व हिंदी सचिवालय-मॉरीशस के उप महासचिव डॉ. शुभंकर मिश्रा ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। वेबिनार में पैनलिस्ट के रूप में डॉ. शहजाद अहमद अंसारी, सहायक निदेशक, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और डॉ. अनुशब्द, वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय ने भाग लिया।

वेबिनार की अध्यक्षता राजनीति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष और एसएनसीडब्ल्यूएस की निदेशक, प्रोफेसर बुलबुल धर जेम्स ने की। वेबिनार के संयोजक जामिया के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर नावेद जमाल थे और चर्चाकर्ता एसएनसीडब्ल्यूएस की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. आमना मिर्जा थीं।

वेबिनार में मुख्य वक्ता डॉ. शुभंकर मिश्र ने प्रवासी भारतीयों के बीच अखिल भारतीय पहचान बनाने में हिंदी की प्रासंगिकता पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने राजभाषा हिंदी, सतत विकास और बहुभाषावाद की अवधारणा, सरकारी स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार, प्रवासी भारतीय की अवधारणा, प्रवासी भारतीय विश्व, हिंदी जगत का निर्माण: स्वदेशी और विदेशी, प्रवासी हिंदी सहित कई विषयों पर चर्चा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी भाषा को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा को मान्यता दिलाने की दिशा में काम कर रहा है।

उन्होंने कहा कि हिंदी 40 से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में संचार, भागीदारी और ज्ञान की भाषा है। उन्होंने कहा कि बहुभाषावाद की अवधारणा वास्तव में स्वदेशी भाषाओं के महत्व की मान्यता पर केंद्रित है, जो विविध भाषाई पृष्ठभूमि, आकांक्षाओं और भाषा के महत्वपूर्ण उपयोगों को स्वीकार करती है। यह न केवल सूचना और ज्ञान के प्रसार के लिए बल्कि एक समावेशी और टिकाऊ समाज बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण है। वेबिनार में उन्होंने हिंदी भाषा के लिए सरकारी स्तर पर गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय के स्तर पर किये जा रहे कार्यों का जिक्र किया|

प्रवासी भारतीयों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि वे लोग भारत छोड़कर दुनिया के दूसरे हिस्सों में बस गये हैं| भले ही वे अलग-अलग देशों में रहते हैं और अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, फिर भी वे भारत से जुड़े हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र के इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर माइग्रेशन द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया में प्रवासी भारतीयों की आबादी 1.75 करोड़ है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा मानी जाती है। उन्होंने कहा कि विदेशों में हिन्दी के कई रूप विकसित हुए हैं। जैसे सूरीनाम में, वहां सरनामी हिंदी/सरनामी हिंदुस्तानी/सरनामी है; गुयाना में गायनी भोजपुरी है; दक्षिण अफ़्रीका में नटाली हिन्दी है;

मॉरीशस में क्रियोल/भोजपुरी हिंदी है; फिजी में, फिजी हिंदी/फिजीबल है; और त्रिनिदाद में त्रिनिदाद हिंदी है।

वेबिनार में डॉ. अनुशब्द ने कहा कि भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है। दुनिया भर में कई भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन अकेले भारत में ही सबसे ज्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा के लिए कोई विशेष क्षेत्र नहीं है क्योंकि हिंदी पूरे देश की भाषा है| उन्होंने हिंदी भाषा के वैश्विक प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि वैश्विक स्तर पर 140 देशों में हिंदी बोली जाती है. अपनी पुर्तगाल यात्रा को याद करते हुए उन्होंने कहा कि पुर्तगाल में सुरक्षा अधिकारी ने हिंदी में जवाब दिया और उनकी मदद की| उन्होंने पूर्वोत्तर में हिंदी की विकास यात्रा का विस्तार से वर्णन किया और यमुना श्रीवास्तव, राजा राघव दास, रजनीकांत चक्रवर्ती और गोपीनाथ के योगदान पर प्रकाश डाला। खाड़ी देशों में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता पर उन्होंने कहा कि सऊदी अरब में अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को तीसरी अदालती भाषा के रूप में मान्यता दी गई है।

डॉ. शहजाद अहमद अंसारी ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा हिन्दी भाषा के विकास में किए गये कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि आयोग हिंदी और भारतीय भाषाओं के विकास के लिए काम करता है| उन्होंने शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया को विस्तार से समझाते हुए कहा कि शब्दावली निर्माण में कई बाधाएं आती हैं, लेकिन आम जनता के लिए उपयुक्त शब्दों को प्राथमिकता दी जाती है। वहीं डॉ. आमना मिर्जा ने कहा कि एक भाषा से राष्ट्र निर्माण और उसकी अवधारणा का बोध होता है। विश्वविद्यालय पूरे विश्व को जोड़ने का काम करते हैं। आज के समय में जब विश्वगुरु और विश्वामित्र की बात होती है तो यही भावना विश्वविद्यालयों से निकलती है।

प्रोफेसर नावेद जमाल द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ वेबिनार का समापन हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया